दोस्ती चिट्ठी से ...

अक्षय कुमार दीक्षित

अपनी कक्षा में बच्चों को पत्र लिखना सिखाने का काम कैसे किया– इसका विस्तार से ज़िक्र है इस लेख में। आमतौर पर यह समझा जाता है कि पत्र के प्रारूप को बता देने भर से बच्चे पत्र लिखना सीख जाएँगे। बच्चे इस प्रारूप को तो समझ जाते हैं, लेकिन फिर भी पत्र नहीं लिख पाते। वे यह समझ नहीं पाते कि वे पत्र लिख ही क्यों रहे हैं? लेख और इसमें दिए गए क्रियाकलाप यह बताते हैं कि पत्र अभिव्यक्ति का सहज माध्यम हैं और इस सहजता को बरक़रार रखते हुए बच्चे इसे आसानी से सीख सकते हैं। सं.

पत्र हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। प्रत्येक मानव को पत्र किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाना प्रत्येक मानव की नैसर्गिक आवश्यकता है। इसी आवश्यकता की पूर्ति करने का एक ज़रिया हैं– पत्र। इस दृष्टिकोण से पत्र लेखन, भाषा शिक्षण का महत्त्वपूर्ण अंग है।

सवाल यह उठता है कि बच्चों को पत्र लेखन की शुरुआत किस तरह करवाई जाए? अगर उन्हें सीधे-सीधे श्यामपट्ट या किसी पुस्तक से पत्र नक़ल करवा दिए जाएँ तो वे परीक्षा में भले ही कोई पत्र रटकर लिख लें, लेकिन असल ज़िन्दगी में शायद ही कभी पत्र लिखने के लिए क़लम उठाएँ। फिर ऐसे पत्र लिखवाने का क्या फ़ायदा? आप समझ गए होंगे कि पत्रलेखन इतना सीधा-सादा मामला नहीं है, जितना नज़र आता है।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने अपनी कक्षा के बच्चों को पत्र लिखना सिखाने के लिए विशेष योजना बनाकर कार्य करने का निश्चय किया।

यह विचार किया कि तीसरी कक्षा में बच्चों को व्यक्तिगत पत्र लिखवाना प्रारम्भ करने से पहले पत्र क्या होता है और कैसे लिखा जाता है, कैसा दिखता है और कैसे भेजा जाता है, ऐसी सभी प्रकार की छोटी से छोटी बातों को समझना अच्छा रहेगा। समझने-समझाने का यह काम पूरी तरह से क्रियाकलापों और खेलों द्वारा करवाया। नीचे कुछ क्रियाकलाप दिए गए हैं, जिन्हें अलग-अलग समय पर अपनी कक्षाओं में करवाया था।

टेलीफ़ोन बनाने की विधि

1. माचिस के केस के ठीक बीच में एक छेद कर लें।
2. उसमें एक धागा डाल दें।
3. धागे के सिरे पर एक तीली बाँध दें, ताकि धागा केस में से निकल न जाए।
4. धागे का दूसरा सिरा दूसरे केस में इसी तरह बाँध दें।
5. टेलीफ़ोन तैयार है। दो बच्चे, दोनों केस लेकर इस तरह दूर-दूर खड़े हो जाएँ कि धागा सीधा तन जाए।
6. एक बच्चा केस को कान से लगा ले। दूसरा बच्चा अपनी तरफ वाले केस को मुँह से सटाकर कुछ बोले। वह बात दूर खड़े बच्चे तक पहुँच जाएगी।
7. अब पहला बच्चा बोले और दूसरा बच्चा कान से केस लगाकर सुने।

क्रियाकलाप 1 : टेलीफ़ोन बनाना

सबसे पहले बच्चों को जाने-पहचाने माध्यम द्वारा बातचीत यानी सम्प्रेषण का अनुभव करवाने की योजना बनाई। वह माध्यम है टेलीफ़ोन!

एक दिन बच्चों से धागा, माचिस की ख़ाली डिब्बियाँ और टीन के ख़ाली डिब्बे मँगवा लिए। स्वयं भी कक्षा में माचिस से बना फ़ोन का मॉडल लेकर गया। उस मॉडल का प्रयोग करके एक बच्चे से बात की : धीमे से कुछ बोला और फिर उस बच्चे से पूछा, "बताओ, मैंने क्या कहा था?"

उस बच्चे ने बताया, "आपने कहा था कि मेरा फ़ोन अनोखा है।" मैंने कहा, "बिल्कुल सही। है न सचमुच अनोखा यह फ़ोन?" सभी बच्चे दंग रह गए यह देखकर कि यह अजीब-सी दिखने वाली चीज़ सचमुच फ़ोन का काम कर सकती है!

उसके बाद बच्चों को बताया, "आप भी अपना-अपना फ़ोन बना सकते हैं। इसे बनाना बहुत आसान है। इसके लिए दो ख़ाली टीन के डिब्बे या माचिस के अन्दर का केस और एक धागा चाहिए।"

इसके बाद, चरणबद्ध तरीक़े से बच्चों से माचिस का टेलीफ़ोन बनवाया। कुछ बच्चों को यह फ़ोन बनाना पहले से आता था, इसलिए उन्होंने फ़ोन बनाने में दूसरे बच्चों की सहायता की।

क्रियाकलाप 2 : फ़ोन पर बातचीत

अब कक्षा के कुछ बच्चों को अपने बनाए या उनके बनाए टेलीफ़ोन द्वारा बातचीत करने के लिए बुलाया। बच्चों का चयन पर्ची पर नाम लिखकर किया गया। यह स्पष्ट किया कि एक बार में दो बच्चे आपस में बातचीत करेंगे। एक कुर्सी और मँगवा ली और कक्षा के सामने दोनों बच्चों के बैठने का प्रबन्ध कर दिया, ताकि उन्हें बातचीत करते हुए सभी बच्चे देख सकें। बच्चों से सलाह करके प्रत्येक जोड़े के बात करने के लिए 2 मिनट का समय निर्धारित कर दिया, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को आगे आने का मौक़ा मिल सके। बच्चों को बताया कि टेलीफ़ोन पर जिस तरह बात करते हैं, उसी प्रकार बात करनी है। चाहता तो था कि टेलीफ़ोन की घण्टी बजाने का प्रबन्ध भी हो जाए, लेकिन वह नहीं हो सका। हाँ, एक अनोखा काम यह किया कि दोनों बच्चों के बीच में एक पर्दा लगा दिया।

क्रियाकलाप 3 : बातचीत एकतरफ़ा

बच्चों के सामने दो कुर्सियाँ/स्टूल रख दिए और उनके बीच में पर्दा लगा दिया। बच्चों के नामों की पर्चियाँ बनवा लीं। दो-दो पर्ची निकालकर दो-दो बच्चों को आमन्त्रित किया। दोनों बच्चे कुर्सियों पर बैठ गए। एक पर्दा बीच में था, इसलिए वे एक दूसरे को देख नहीं सकते थे।

मैंने कहा, "बारी-बारी से प्रत्येक बच्चा दूसरे बच्चे से बात करेगा, लेकिन शर्त यह है कि दूसरा बच्चा बीच में जवाब नहीं देगा। प्रत्येक बच्चे को दूसरे बच्चे से 2 मिनट तक बात करनी है और बीच में कम से कम रुकना है। दूसरा बच्चा आपको देख नहीं सकता, इसलिए बातचीत शुरू करने से पहले उसका नाम लेकर पुकारें और बातचीत ख़त्म हो तो उसे अपना नाम बताएँ।"

खेल शुरू हो गया।

एक बच्चे ने कहा, "सुन्दर, क्या हाल है? तू क्या कर रहा है? मैं तुझे देख नहीं सकता और तेरी बातें सुन भी नहीं सकता, लेकिन अपनी बातें तो बोल सकता हूँ। बोल, क्या तू स्कूल के बाद मेरे साथ मेरे घर चलेगा? हम मिलकर ख़ूब खेलेंगे और टीवी देखेंगे..."

जब भी बच्चे बीच में अटक रहे थे, मैं उनकी सहायता कर रहा था। यह भी किया जा सकता है कि जो बच्चे पिछली गतिविधि में भाग ले चुके हैं, उन्हें इस गतिविधि में दर्शक रहने दिया जाए।

क्रियाकलाप 4 : क्या कहा ?

जब सब बच्चों की बारी पूरी हो गई तो बच्चों से कहा कि उन्होंने टेलीफ़ोन पर जो भी बातें कही थीं, वे अपनी-अपनी कॉपी में लिख लें। अगर वे कुछ भूल गए हों तो भी घबराने की बात नहीं है; वे चाहें तो लिखते-लिखते नई बातें भी जोड़ सकते हैं। ध्यान रखें कि अपनी बात के शुरू में और अन्त में उचित स्थान पर अपना और अपने दोस्त का नाम ज़रूर लिखना है।

बच्चों ने पिछले क्रियाकलाप में जो बातें परदे के पीछे बैठे अपने साथी से कही थीं, वे उन्होंने अपनी कॉपी में लिख लीं।

क्रियाकलाप 5 : पत्र क्या है ?

अब मैंने बच्चों को बताया, "बहुत समय पहले जब टेलीफ़ोन नहीं थे, तब लोग दूर रहने वाले दोस्तों और रिश्तेदारों से इसी तरह लिखकर बातचीत किया करते थे। इसी लिखी हुई 'बातचीत' को चिट्ठी या पत्र कहते हैं। आज के समय में भी लोग एक दूसरे को ख़ूब पत्र लिखते हैं।"

इसके बाद बच्चों को अलग-अलग तरह के पत्र दिखाए। पत्रों का प्रबन्ध पहले से ही कर लिया था। यह वे पत्र थे, जो समय-समय पर दूसरी कक्षाओं में लिखवाए थे। कुछ पत्र अपने घर में भी ढूँढ लिए थे। पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय, लिफ़ाफ़ों आदि पर लिखे पत्र देखकर बच्चे काफ़ी उत्साहित हो गए। बच्चों के समूह बनाकर प्रत्येक समूह को एक-एक पत्र दे दिया। श्यामपट्ट पर एक तालिका बना दी और बच्चों से कहा, "आपके समूह के पास जो पत्र हैं, उनके बारे में चर्चा करके यह तालिका भरिए।

पत्र किसने लिखा	पत्र किसे लिखा गया	पत्र कब लिखा गया	पत्र कहाँ लिखा गया	पत्र किस जगह पर भेजा गया	पत्र पर छपा मूल्य

बच्चों ने आपस में चर्चा करके तालिका को आसानी से भर लिया। इस गतिविधि का उद्देश्य पत्र के विभिन्न अंगों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करना था।

क्रियाकलाप 6 : लिखें पत्र

अब बच्चों को पत्र लिखने के लिए कहा। पत्र किसे लिखना है, किस बारे में लिखना है– इस बारे में बच्चों को स्वतन्त्र छोड़ दिया। मेरा विचार था कि बच्चे स्वयं निर्धारित करेंगे कि वे किसे पत्र लिखना चाहते हैं और पत्र में क्या कहना चाहते हैं।

पत्र लिखने के लिए 5 से 10 मिनट का समय निर्धारित कर दिया, लेकिन यह अवधि केवल सांकेतिक थी। जब आप कोई रचनात्मक कार्य करवाते हैं तो उसमें समय की सीमा को लचीला बना लेना बेहतर रहता है। जब बच्चों ने पत्र लिख लिया तो उनसे कहा, "अब आप अपने-अपने पत्र को पढ़कर सुनाइए।"

कुछ बच्चों ने पत्र पढ़कर सुनाने में काफी उत्साह दिखाया। चूँकि वे जानते थे कि उन्होंने पत्र में क्या लिखा है इसलिए पढ़ने में उन्हें दिक़्क़त नहीं हो रही थी। एक-दो बच्चे अपना पत्र पढ़ने में झिझक रहे थे। जो बच्चे अपना पत्र पढ़कर सुनाना नहीं चाहते थे, उन्हें विवश नहीं किया; बल्कि उनके पास जाकर उनकी अनुमति से पत्र को चुपचाप देख भर लिया।

क्रियाकलाप 7 : डाकिया डाक लाया

अगले दिन एक बार फिर पत्र लिखवाने की गतिविधि का आयोजन किया। इस बार बच्चों को एक-दूसरे को पत्र लिखना था। कक्षा के सभी बच्चों के नामों की पर्चियाँ बनवा लीं और उन्हें अच्छी तरह मिला लिया। अब प्रत्येक बच्चे को एक पर्ची उठाने के लिए कहा। उन्हें पहले ही बता दिया था कि जिस बच्चे के पास जिसके नाम की पर्ची आएगी, वह उसी को पत्र लिखेगा। जब सभी बच्चों ने पत्र लिख लिए, तो उन्हें एक डाकपेटी में डाल दिया गया। फिर एक बच्चा डाकिया बन गया और उसने सभी पत्र

पेटी से निकालकर सही बच्चे तक पहुँचा दिए। अपने नाम का पत्र देखकर-पढ़कर प्रत्येक बच्चे को जो ख़ुशी मिली, उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। डाकिया पत्र बाँटते हुए नाटकीय अन्दाज़ में बोल रहा था– "सुनीता के नाम की चिट्‌ठी आई है..." "डाकिया डाक लाया..."आदि।

इस क्रियाकलाप में यह भी कर सकते हैं :

पत्र पढ़ने के बाद बच्चे उसे अपनी-अपनी कॉपी में चिपका सकते हैं। डाकिया, किसी अन्य कक्षा के बच्चे को भी बनाया जा सकता है। यदि आप किसी अन्य कक्षा के बच्चे को डाकिया बनाते हैं, तो उस कक्षा के शिक्षक से अनुमति ले लें और अपनी कक्षा के बच्चों को डाकिया की भनक तक न लगने दें। डाकिया देखकर उन्हें जो प्रसन्नता मिश्रित हैरानी होगी, वह आपके प्रयास को सार्थक कर देगी। आप स्वयं भी डाकिया की भूमिका निभा सकते हैं।

डाकपेटी और डाक-थैले का प्रबन्ध पहले से कर लें। डाकपेटी कक्षा के दरवाज़े के बाहर रखी जा सकती है, ताकि बच्चों को इस बात का अहसास हो कि डाकपेटी कहीं दूर होती है। डाक-थैला प्लास्टिक का ना हो तो अच्छा रहेगा।

इस गतिविधि को और बड़े पैमाने पर करने के लिए इसमें अन्य कक्षाओं/वर्गों को भी शामिल किया जा सकता है। अब आप एक निर्धारित स्थान पर 'डाक घर' की स्थापना भी कर सकते हैं, जहाँ अलग-अलग कक्षाओं के बच्चों के पत्रों की छंटनी होगी और उन्हें अलग-अलग थैलों में डालकर सही कक्षा तक पहुँचाया जाएगा। ऐसी स्थिति में डाकपेटी को थोड़ा अधिक दूर स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार बच्चे पूरी डाक प्रक्रिया को समझ सकेंगे। बच्चों से ही काग़ज़ के डाक टिकट बनवाकर पत्रों पर चिपकवाए जा सकते हैं। बच्चे टिकट/कार्ड आदि डाकघर से ख़रीदने का अभिनय भी कर सकते हैं।

क्रियाकलाप 8 : जवाबी चिट्ठी

जब सब बच्चे अपने-अपने पत्र (जो उन्हें किसी और ने लिखे हैं) पढ़ चुके, तो बच्चों को उन पत्रों के जवाब में पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया। जिन बच्चों को लिखने में कुछ दिक़्क़त थी, उनके साथ बैठकर उनकी सहायता की। बोर्ड पर पत्र का एक प्रारूप भी नमूने के रूप में बना दिया।

क्रियाकलाप 9 : घर पर चिट्ठी

एक दिन मैंने बच्चों से एक-एक पोस्टकार्ड लाने के लिए कहा। मुझे अहसास था कि सभी बच्चे पोस्टकार्ड नहीं ला सकेंगे इसलिए स्वयं भी पोस्टकार्डों का प्रबन्ध कर लिया था। बच्चों को बताया, "आज हम अपने-अपने घर को चिट्‌ठी लिखेंगे।"

एक बच्चे ने पूछा, "अपने घरवालों से तो हम रोज़ मिलते हैं, उनके साथ रहते हैं; उन्हें चिट्‌ठी लिखकर क्या फायदा?"

मैंने कहा, "चिट्‌ठी लिखने का एक फ़ायदा यह है कि हम मन की वे बातें अच्छी तरह सोच समझकर बता सकते हैं, जो आमने-सामने या टेलीफ़ोन पर झिझक के कारण नहीं कह पाते। दूसरा फ़ायदा यह है कि पत्र पढ़कर, पढ़नेवाले को बहुत सुकून मिलता है। तीसरा फ़ायदा यह है कि पत्र को बार-बार पढ़ा जा सकता है और सहेजकर रखा जा सकता है। अब आप अपने घर के किसी व्यक्ति को चिट्‌ठी लिखिए और उसे बताइए कि वह व्यक्ति आपको अच्छा क्यों लगता है।"

यह बात समझाने के बाद बच्चों को पत्र लिखने के लिए समय दिया। जब बच्चों ने पत्र लिख लिया, तो उन्हें पत्र पर निर्धारित जगह उनका अपना पता लिखने के लिए कहा। यह अन्दाज़ा था कि बहुत से बच्चों को अपना पूरा पता (पिन कोड सहित) मालूम नहीं होगा। अत: इस गतिविधि से पहले सभी बच्चों से कॉपी या

काग़ज़ की पर्ची पर उनका पता, घर के बड़ों से पूछकर, लिख लाने के लिए कह दिया था।

जब बच्चों ने पता लिख लिया, तो उनसे कहा, "स्कूल के बाद आप इस पत्र को डाकपेटी में डाल दें। जब डाकिया इसे आपके घर पर पहुँचा दे, तब आप इसे कक्षा में लाकर दिखाइए। जिन बच्चों को नहीं पता था कि डाकपेटी कहाँ है, उन्हें बता दिया और जिन बच्चों को पता था, उन्हें दूसरों की सहायता करने के लिए तैयार किया।

इस क्रियाकलाप में यह भी करें :

बच्चों को यह भी बताइए कि आपके विद्यालय के निकट डाकपेटी कहाँ है। सम्भव हो तो इलाक़े के डाकघर के पोस्टमास्टर से मिलकर उन्हें अपने विद्यालय के इस क्रियाकलाप की सूचना अवश्य दें और उनका सहयोग लें। उन्हें यह जानकार बहुत प्रसन्नता होगी कि आप बच्चों को पत्र लिखने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इस प्रकार आप सुनिश्चित कर सकेंगे कि बच्चों द्वारा पोस्ट किए गए सभी पत्र उनके घरों में पहुँच जाएँ।

धीरे-धीरे सभी बच्चे सूचना देने लगे कि उनका पत्र घर पर पहुँच गया है। एक दिन निर्धारित किया गया, जब सभी बच्चे अपना-अपना पत्र कक्षा में लेकर आएँगे। उस रोज़ कक्षा में उन्हें पत्र को ध्यान से देखने के लिए कहा। फिर पूछा, "जब आपने इस पत्र को डाकपेटी में डाला था, उस समय से आपके हाथों में आने तक आपके पत्र में कौन-कौन से बदलाव आ गए हैं?"

इस प्रश्न का मक़सद बच्चों का ध्यान पोस्टकार्ड पर छपी मोहर पर आकर्षित करवाना था। एक-दो बच्चों ने तुरन्त बता दिया– "मेरी चिट्ठी पर काला-काला कुछ बना हुआ है/छपा हुआ है/लगा हुआ है!"

तब उन्हें बताया, "इसे मोहर कहते हैं। जब हमारी चिट्ठी डाकघर पहुँचती है, तो वहाँ पर इसे लगाया जाता है।"

बच्चों से कहा कि वे ध्यान से देखें कि मोहर से कौन-कौन सी सूचनाएँ मिल पाती हैं। लेकिन इस कार्य में एक दिक़्क़त थी– सभी पोस्टकार्डों की मोहरें पठनीय नहीं थीं। जिन बच्चों के पत्रों की मोहरें पढ़ी नहीं जा रही थीं, उन बच्चों को एक दूसरे के पोस्टकार्डों की मोहरें देखने के लिए प्रोत्साहित किया।

इसके बाद बच्चों से चर्चा की : जब उनके घर पोस्टकार्ड पहुँचा और उसे पढ़ा गया, तब क्या-क्या हुआ? बच्चों ने बड़े उत्साह से अपने मधुर अनुभव साझा किए।

इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों को उस आनन्द का अनुभव देना था, जो आनन्द घर पर पत्र पाने और उसे पढ़ने से मिलता है। एक बार इस आनन्द का अनुभव करने के बाद वे जीवन भर इसे भूल नहीं सकेंगे।

गर्मी की छुट्टियों के लिए इस गतिविधि को एक अन्य तरीक़े से करवाया। बच्चों से कहा,"अब तो हम सब एक दूसरे से डेढ़ महीने बाद मिलेंगे। मुझे तो तुम सबकी बहुत याद आएगी। क्या तुम्हें मेरी याद आएगी?"

सब बच्चों ने एक स्वर में कहा– "हाँ सर!!!"

मैंने कहा, "तो जिस-जिस को मेरी याद आए, वह मुझे पत्र लिखे। आप पत्र में अपने मन की बातें लिखना।"

मैंने श्यामपट्ट पर अपना पता लिख दिया। उन छुट्टियों में काफ़ी बच्चों ने मुझे पत्र लिखे। कुछ के पत्र तो पहुँच नहीं सके, लेकिन काफ़ी पत्र मेरे घर पर पहुँच गए। छुट्टियाँ समाप्त होने के बाद जब विद्यालय खुला, तो मैं वे पत्र कक्षा में ले गया और बच्चों को दिखाए। उन्हें बताया कि उनके पत्र पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। उस समय कक्षा में ऐसा कोई चेहरा न था जिस पर मुस्कान न हो!

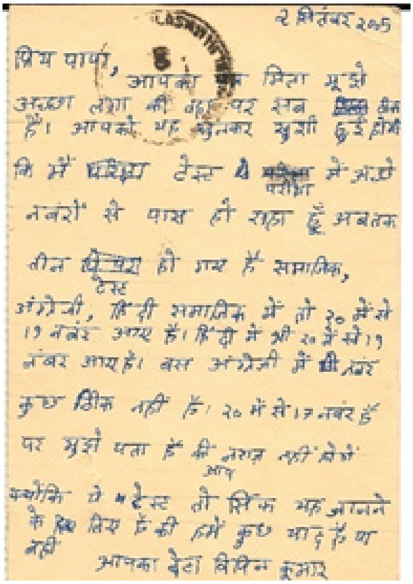

२ सितंबर २००५

प्रिय पापा,
आपको ... मिला मुझे अच्छा लगा की यहाँ पर सब ठीक है। आपको यह सुनकर खुशी हुई होगी कि मैं परीक्षा टेस्ट में अच्छे नंबरों से पास हो रहा हूँ अबतक तीन टेस्ट हो गए हैं सामाजिक, अंग्रेजी, हिंदी समाजिक में तो २० में से १९ नंबर आए हैं। हिंदी मे भी २० में से १९ नंबर आए है। बस अंग्रेजी में नंबर कुछ ठीक नहीं है। २० में से १७ नंबर हैं पर मुझे पता है की आप नाराज नहीं होंगे क्योंकि ये टेस्ट तो सिर्फ यह जानने के लिए है की हमें कुछ याद है या नहीं

आपका बेटा विपिन कुमार

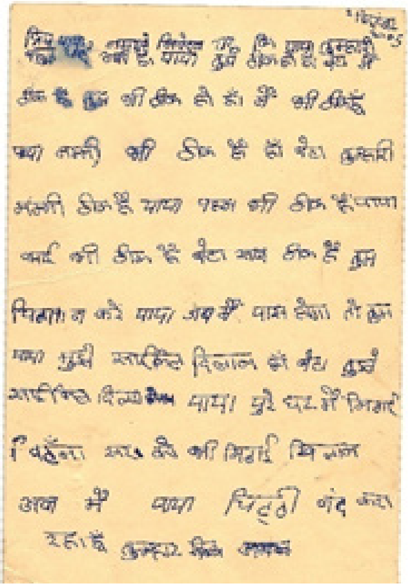

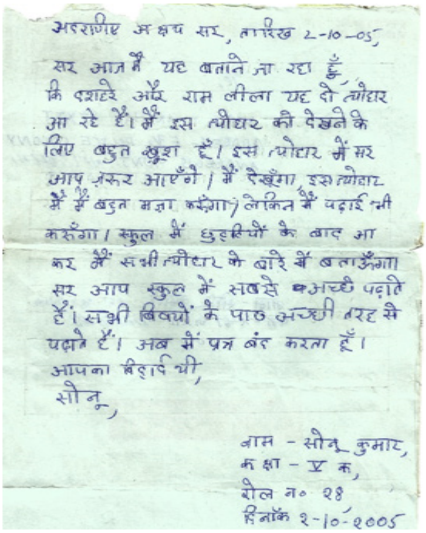

आदरणीय अक्षय सर, तारिख 2-10-05,

सर आज मैं यह बताने जा रहा हूँ कि दशहरे और राम लीला यह दो त्योहार आ रहे हैं। मैं इस त्योहार को देखने के लिए बहुत खुश हूँ। इस त्योहार में सर आप जरूर आएँगे। मैं देखूँगा इस त्योहार मैं मैं बहुत मजा करूँगा। लेकिन मैं पढ़ाई भी करूँगा। स्कूल में छुट्टियों के बाद आ कर मैं सभी त्योहार के बारे में बताऊँगा सर आप स्कूल में सबसे अच्छे पढ़ाते हैं। सभी विषयों के पाठ अच्छी तरह से पढ़ाते हैं। अब मैं पत्र बंद करता हूँ।
आपका विद्यार्थी,
सोनू,

नाम - सोनू कुमार,
कक्षा - V क,
रोल नं० 28
दिनांक 2-10-2005

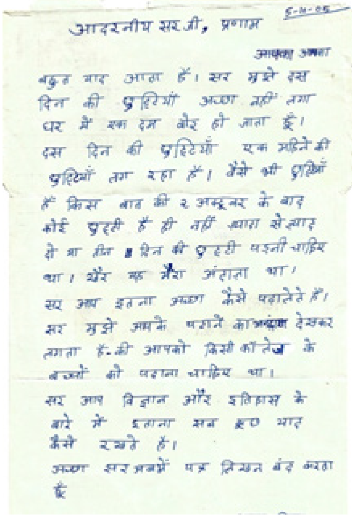

5-10-05

आदरनीय सर जी, प्रणाम

आपकी याद बहुत याद आता है। सर मुझे दस दिन की छुट्टियाँ अच्छा नहीं लगा घर मैं बहुत बोर हो जाता हूँ। दस दिन की छुट्टियाँ एक महिने की छुट्टियाँ लग रहा है। वैसे भी छुट्टियाँ है किस बात की २ अक्तूबर के बाद कोई छुट्टी है ही नहीं ज्यादा से ज्यादा दो या तीन दिन की छुट्टी पड़नी चाहिए था। खैर यह मेरा अंदाजा था। सर आप इतना अच्छा कैसे पढ़ातेहे हैं। सर मुझे आपके पढ़ाने का ढंग देखकर लगता है की आपको किसी कॉलेज के बच्चों को पढ़ाना चाहिए था।
सर आप विज्ञान और इतिहास के बारे में इतना सब कुछ याद कैसे रखते है।
अच्छा सर अब मैं पत्र लिखना बंद करता हूँ

चिट्ठियों के नमूने

अक्षय कुमार दीक्षित शिक्षा सलाहकार और लेखक हैं। पिछले दो दशक से बच्चों की शिक्षा के बारे में लिखते रहे है। बच्चों और शिक्षकों के लिए पाठ्य-सामग्री के विकास के साथ-साथ शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों से जुड़ रहे हैं। वर्तमान में दिल्ली में हिन्दी शिक्षण के साथ-साथ शिक्षक विकास समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं।
सम्पर्क : akshaydixitdelhi@gmail.com